श्री सनातन जैन धर्म
श्रीमद् राजचंद्र आश्रम, अगासका सचित्र दर्शन

श्री श्वेतांबर और श्री दिगंबर जिनमंदिर और सभामंडपका बाहरका दृश्य

परम ज्ञानावतार परमकृपाळुदेव श्रीमद् राजचंद्रजीके परम आज्ञांकित भक्त श्री लघुराजस्वामी (प्रभुश्रीजी) के निमित्तसे इस आश्रमकी स्थापना विक्रम संवत १९७६ में हुई है । मुनिश्री लघुराजस्वामीकी छत्रछायामें (प्रत्यक्ष हाजरीमें) इस आश्रमकी उत्पत्ति होनेसे भक्तजनोने प्रारंभमें इस आश्रमका नाम "श्री लघुराज आश्रम" रखा था, परंतु अपना नाम या स्थापना तककी इच्छा नहीं रखनेवाले मात्र निस्पृह और परम गुरुभक्त महर्षि मुनिश्रीने ऐसा घोषित किया कि श्रीमदजीके इस स्थूल कीर्तिस्तंभका नाम "श्री सनातन जैन धर्म, श्रीमद् राजचंद्र आश्रम" रखा जाए । उनके आदेशानुसार इस आश्रमका नाम रखा गया है । इस आश्रमका मूल उद्देश्य श्रीमद् राजचंद्रजीके अनुयायी, उनके प्रति श्रद्धा रखनेवाले, उत्तम प्रकारसे धर्मबोधको प्राप्त करें, यह है । श्री सनातन जैन वीतराग मार्गकी आराधनाके लिये ही यह आश्रम हैं ।

: अगास आश्रममें प्रतिदिन चल रहे भक्तिके कार्यक्रम :

प्रात:काल	४-०० से ६-३०	भक्ति, आलोचना, स्तवन आदि	शामको ६-०० से ६-४५ देववंदन, आरती (सूर्यास्तके अनुसार बदलेंगे)
सुबह	९-०० से ११-४५	भक्ति और पूजाका क्रम	रातको ७-०० से ९-३० भक्ति, वांचन (सूर्यास्तके अनुसार बदलेंगे)
दोपहर	२-०० से ४-१५	भक्ति, वांचन	प्रतिदिन १० घन्टेका भक्तिक्रम आश्रममें १०० सालसे चल रहा है ।

(पर्वके दिनोमें कार्यक्रम और ऋतु अनुसार समयमें परिवर्तन होता हैं ।)

आश्रममें आनेवाले भाई-बहिनोंको भक्तिमें भाग लेना आवश्यक है ।

विक्रम संवत १९५४ में श्रीमद् राजचंद्र, इस अगास स्टेशन पर पधारे थे

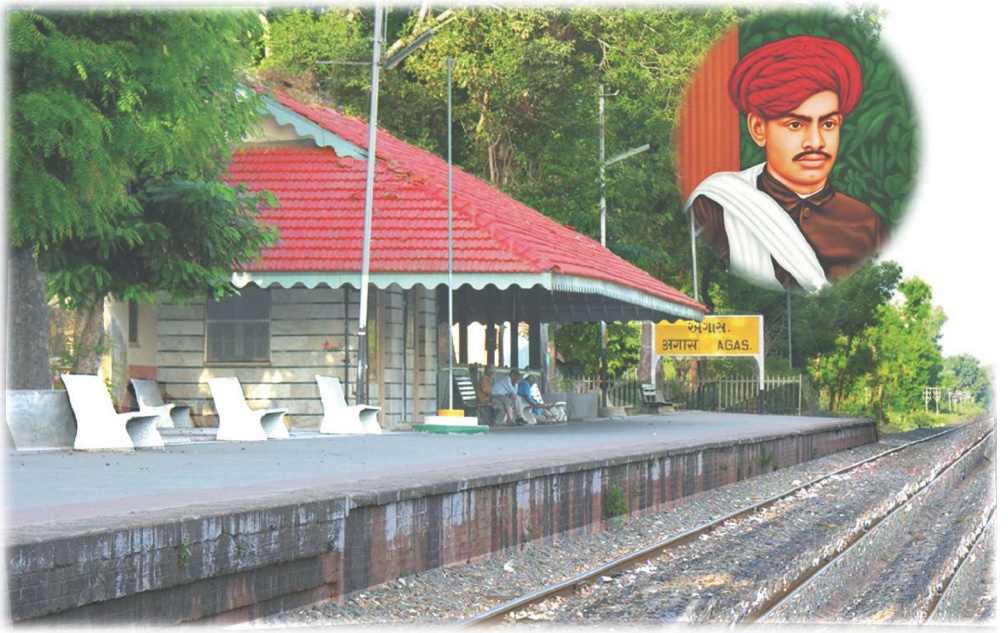

"हे मुमुक्षु ! एक आत्माको जाननेसे समस्त लोकालोकको जानोगे, और सर्व जाननेका फल भी एक आत्मप्राप्ति है ।" –श्रीमद् राजचंद्र (व. पृ. ४८२)

श्रीमद् राजचंद्र वर्षमें थोडे महिने एकांत स्थानोमें निवृत्तिके लिये इडर, उत्तरसंडा, रालज, वडवा, काविठा आदि स्थलोमें जाकर निवास करते थे । विक्रम संवत १९५४ में श्रीमद् राजचंद्र काविठा गाँव जानेके लिये अगास स्टेशन पर उतरे थे और स्टेशन परके वेईटींग रूममें जो आज भी है, उसी कमरेमें बिराजे थे, श्री अंबालालभाई साथमें थे । काविठासे उनको लेनेके लिये बैलगाडी लेकर आनेमें दो से ढाई घंटेका समय निकल गया । उस समय दरमियान श्रीमद् राजचंद्र हालमें जहाँ आश्रम है उस भूमि पर आये थे और ध्यान भी किया था । और अंबालालभाईको इस आश्रमकी भूमिके बारेमें बताया था कि– **'यह पुण्यभूमि है, तीर्थधाम होगा'** ऐसी लोकवायका है । परमकृपालुदेव श्रीमद् राजचंद्रजी द्वारा कही हुई भविष्यवाणी आज साकाररूपसे प्रत्यक्ष दिखाई देती है ।

इस भूमिके माहात्म्यके बारेमें प.पू. प्रभुश्रीजी बताते हैं कि–

"इस आश्रममें कृपालुदेव श्रीमद् राजचंद्रकी आज्ञा प्रवर्तमान है । वे महान अद्‌भुत ज्ञानी है । इस पुण्यभूमिका महत्त्व अलग ही है । यहाँ रहनेवाले जीव पुण्यशाली हैं । लेकिन ऊपरसे दिखाई दे वैसा नहीं है; क्योंकि धन दौलत नहीं है कि लाख दो लाख दिखाई दे । यहाँ तो आत्माके भाव है । आत्माके भाव ही ऊँचेसे ऊँची दशा दिला सकते है ।" (उपदेशामृत पृ. ४३३)

संदेसर गाँवमें हुआ अगास आश्रमकी पूर्वभूमिका का प्रारंभ

संदेसर गाँवमें अगास आश्रमकी उत्पत्तिका संक्षेपमें इतिहास

ज्ञानावतार श्रीमद् राजचंद्र प्रभुका जन्म विक्रम संवत १९२४ की कार्तिक पूर्णिमाका है । इस कारणसे वि. सं. १९७६ की कार्तिक पूर्णिमासे लगाकर आठ दिनका जन्म-जयंति अट्ठाई महोत्सव अगास आश्रमसे २ किलोमीटर दूर आये हुए संदेसर गाँवमें श्री जीजीकाकाके खेतमें प.उ.प.पू. प्रभुश्रीजीकी उपस्थितिमें रक्खा था । उत्सवमें हजारो मुमुक्षुओने भक्ति सत्संगका लाभ लिया था । जीजीकाका वैष्णव पटेल लेकिन धर्म जिज्ञासु थे । एकबार वि. सं. १९५४ में श्रीमद् राजचंद्र आणंद पधारे थे । तब जीजीकाका उनके मित्र मुनदासके साथ अनेक प्रश्न पूछनेके लिये आणंद गये थे । वहाँ बिना पूछे ही सब प्रश्नोका समाधान श्रीमदजीने किया था । जिससे प्रभावित होकर जीजीकाकाने श्रीमद्जीको संदेसर पधारनेका आग्रहपूर्वक आमंत्रण दिया ।

तब श्रीमदजीने कहा— **'मुनि आयेंगे ।'**

बहुत सालोके बाद वि. सं. १९७६ के कार्तिक पूर्णिमाके दिन मुनिश्री प्रभुश्रीजी संदेसर गाँवमें पधारे । श्रीमद्जीकी भविष्यवाणी साकार हुई । संदेसरमें भक्तिके प्रसंगमें मुमुक्षु इकट्ठे हुए थे उस वक्त प.पू. प्रभुश्रीजीको वृद्धावस्था और वायुके दर्दके कारण विहार करना मुश्किल होता था, इसलिये कोई आश्रम जैसा स्थान बने तो मुमुक्षु वर्ग भी भक्ति सत्संगमें लाभ ले सके ऐसी विचारणा हुई । उस वक्त जीजीकाकाने बहुत उल्लाससे १२ वीघाका अपना खेत आश्रमके लिये भेंट में दिया । उसे देखकर दूसरे मुमुक्षुओने टीप की और १७,४०२/- रू. की रकम सिर्फ आधे घन्टेमें हो गई और अगास आश्रमकी पूर्वभूमिकाका प्रारंभ हो गया ।

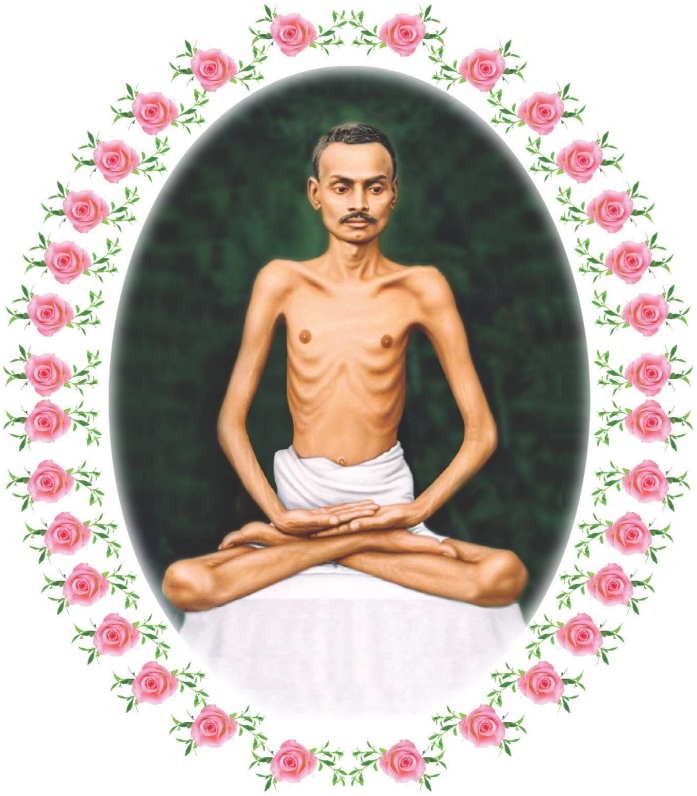

परमगुरू परमकृपालुदेव श्रीमद् राजचंद्र

"हम देहधारी हैं या नहीं इसे जब याद करते हैं तब मुश्किलसे जान पडता है ।"

—श्रीमद् राजचंद्र (व.पृ.२९०)

"प्रथम नमुं गुरुराजने, जेणे आप्युं ज्ञान;
ज्ञाने वीरने ओळख्या, टळ्युं देह-अभिमान." (नित्यक्रम पृ. ३८)

"गुरूदीवो गुरूदेवता, गुरू विण घोर अंधार;
जे गुरू वाणी वेगळा, रडवडीया संसार." (नित्यक्रम पृ. २८)

"अनन्य शरणुं ताहरु प्रभु आ भवे मुजने मल्युं,
मुज रांकना हाथे अहोहो रत्न चिंतामणी चढ्युं;
सद्गुरु कृपाळुदेव एवा शरणना दातार छे,
वंदन करु तुम चरणमां भावे हजारो वार रे।"

**"समर्थस्वामी एक परमकृपालुदेवको ही हमने जो मान्य किया है वे आपके गुरू है;
हम भी आपके गुरू नहीं है, लेकिन हमने जो गुरू किये है वे आपके गुरू है ।"**

—प.पू. प्रभुश्रीजी, (उपदेशामृत पृ.९७)

अगास आश्रमके
अधिष्टाता प.उ.प.पू.
श्री लघुराजस्वामी (प्रभुश्रीजी)

"श्रद्धा एक उपर करें ।
जहाँ तहाँ श्रद्धा करोगे तो
मारे जाओगे । स्वरूपप्राप्त एक
सत्पुरूष परमकृपालुदेव पर श्रद्धा
दृढ होगी तो जप, तप, क्रिया मात्र
सफल हो गयी, मनुष्यभव सफल
हो गया, दीपक प्रकाशित हुआ,
समकित हुआ समझ लो ।"

—प.पू. प्रभुश्रीजी (उपदेशामृत पृ. ३८२)

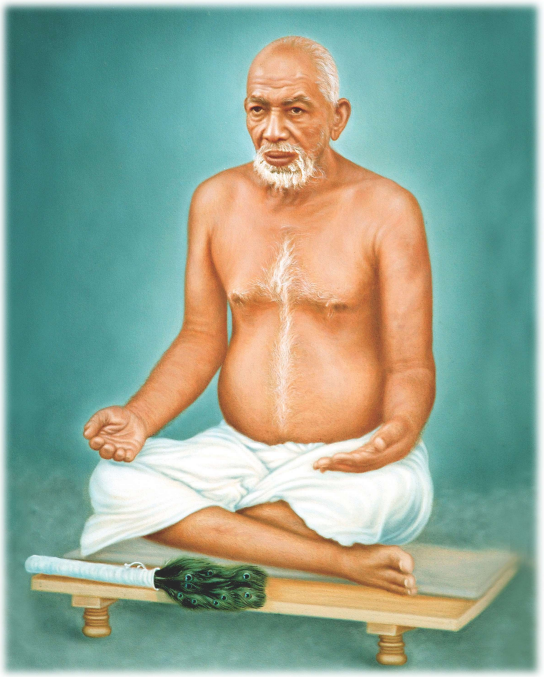

आश्रमकी सरहद कहाँ तक रखेंगे

आश्रम बांधनेका विचार हुआ तब रणछोडभाई, शंकर भगत आदि मुमुक्षु रायणके नीचे बैठे थे उस वक्त रणछोडभाईने कहा आश्रम कहाँ तक बाधेंगे ? पू. प्रभुश्रीजी कुछ बोले नहीं लेकिन खडे होकर मेघजी थोभणकी धर्मशाला तक अपनी लकडी लटकाते हुए चले जिससे लीटा पड गया । वहाँ तक सरहद नक्की हो गई ।

कूएका खोदकाम

दूसरी बार रणछोडभाईने प्रभुश्रीजीको बताया कि प्रभु ! बांधकामके लिये पानीकी जरूरत होगी । तो कुआ किस जगह पर करें ? तब प्रभुश्रीजी चलने लगे, पीछे मुमुक्षु चलने लगे । जहाँ पर प्रभुश्रीजी खडे रहे वहाँ पर भाईश्रीने निशान कर लिया । उस जगह खुदाई चालु की । चालीस फूट नीचे तक खुदाई हो चूकी थी । उस वक्त प्रभुश्रीजीने एक व्यक्तिसे कहा कि जो कुआ खोद रहे है उन्हें बाहर निकालो । थोडे समय बाद कुएकी मिट्टी ढल पडी और कुएका बहुत भाग मिट्टीसे वापस भर गया । फिर लकडेकी रंगी बनाकर जिससे मिट्टी ढल न जाय ऐसा करके फिर खुदाई काम चालु किया । ८०-९० फूट नीचे जाने पर पानीके झरे मिल गये । पानी मीठा निकला । मशीनसे रातदिन पानी निकालते रहे फिर भी पानी कम नहीं होता था ।

श्री सनातन जैन धर्म श्रीमद् राजचंद्र आश्रमका प्रथम प्रवेशद्वार

दरवाजेके अंदर दिखता है वह द्वितीय प्रवेशद्वार

"परमकृपालुदेव द्वारा प्ररूपित सनातन जैन वीतराग मार्गकी पुष्टिके लिये ही यह आश्रम है... सनातन जैन मार्गकी पुष्टिके लिये ट्रस्टिओंको निर्भयतासे वर्तन करना । किसीका भी असत् वर्तन चला नहीं लेना ।" –प.उ.प.पू. प्रभुश्रीजी (उपदेशामृत पृ. ४८८)

"सत् शीलको संभालना है... सबको कहना है कि यहाँ आकर कोई आत्महितके सिवाय दूसरा कुछ करे तो उसे संघ बाहर निकाल दें" (उपदेशामृत पृ. ४४९)

आश्रममें आनेवाले व्यक्तिको पालनेके मुख्य नियम :–

(१) **भक्तिके क्रममें** भाग लेना ।

(२) **सात व्यसन**– जुगार, मांस, दारू, बडी चोरी, वेश्यागमन, शिकार, परस्त्रीगमनका त्याग ।

(३) **सात अभक्ष्य**– बडके टेटे, पीपलके टेटे, पीपलेके टेटे, उमरडा, अंजीर, शहद और मक्खनका त्याग ।

(४) **कंदमूल**– प्याज, लहसुन, आलु, शकरकंद, गाजर, सूरन, रतालु, मूले, अदरक, लीली हल्दी, विगेरेका त्याग ।

(५) **रात्रिभोजन**– का आश्रममें निषेध है ।

(६) **ब्रह्मचर्यपालन**– आश्रममें रहनेवाले, आनेवाले, सब भाई-बहनोके लिये अनिवार्य और आवश्यक है । आश्रमकी नींव ही सत् और शील है । सत् अर्थात् आत्मा संबंधी विचारणा और शील अर्थात् मुख्यरूपसे ब्रह्मचर्यका पालन ।

श्री जिनमंदिर और भक्तिमंडपके सामनेका मुख्य प्रवेशद्वार

''क्षमा यही मोक्षका भव्य दरवाजा है'' –श्रीमद् राजचंद्र

जो अपने दोषोकी दूसरेके पास क्षमा मागेगा और स्वयं भी दूसरेके दोषोंकी क्षमा करेगा वही जीव मोक्षके द्वारमें प्रवेश पा सकेगा । **'मोक्षमें जानेवालेको ही क्षमा गुण प्रकट होता है । जितनी क्षमा उतना मुनित्व है ।'** (बोधामृत १ पृ. २०२)

''पू. प्रभुश्रीजी कहते थे कि सत्पुरूषके दर्शनके लिये और बोध सुननेके लिये विचार करके जो कदम उठाया तो कदम कदम पर यज्ञका फल होता है । बडे दरवाजेकी जगह प्रथम छोटी फाटक थी । तब प्रभुश्रीजीने कहा था कि इस जगह पर हाथी जा सके उतना बडा दरवाजा बनेगा ।'' (बोधामृत - १ पृ. ५)

पू. प्रभुश्रीजीने अपने ज्ञानबलसे जो भविष्यवाणी की थी वह आज हम प्रत्यक्ष देख रहे हैं । आश्रममें हुए अनेक उत्सवोमें तीन या पाँच हाथी अंबाडी सहित शांतिसे इसमेंसे निकल चूके हैं और भविष्यमें भी निकलेंगे ।

प.पू. प्रभुश्रीजीने एकबार बताया कि–

'जिनका बहुत पुण्य बढा होगा वही इस दरवाजेमें पैर रख सकेगा । और यदि वह अंदर आ गया तो फिर उसे पता नहीं चलेगा फिर भी कुछ न कुछ लेकर जायेगा । दरवाजेमें प्रवेश करते समय सामने देवविमान जैसा जिनमंदिर और सभामंडप दिखाई देता है ।

सभामंडप (भक्तिमंडप) और बहार के चौगान का दृश्य

प्रभु ! क्या बिना खंभेका सभामंडप बन सकता है ?

जिन मंदिरके पासका सभामंडप बांधनेका विचार हुआ तब भाईश्री रणछोडभाईको पू. प्रभुश्रीजीने कहा कि प्रभु ! क्या बिना खंभेका सभामंडप बन सकता है ? तब वे एक खोजा आर्कीटेक्टको बुला लाये । उसने रायण वृक्षके नीचे धूलमें बिना खंभेका सभामंडपका नक्शा बनाकर दिखाया । उसे देखकर **प्रभुश्रीजी बोले : वाह ! प्रभु वाह ! ऐसा ही चाहिए ।** ऐसा ही जिनमंदिरके पासका सभामंडप बना हुआ है।

सभामंडप (भक्तिमंडप) में चलती हुई भक्तिका दृश्य

''भक्तिके बलसे ज्ञान निर्मल होता है । निर्मल ज्ञान मोक्षका कारण बनता है ।''

– श्रीमद् राजचंद्र (पृ. ४३०)

इस सभामंडपमें प.उ.प.पू. प्रभुश्रीजी द्वारा परमकृपालुदेवका चित्रपट विक्रम संवत् १९८४ के जेठ सुद ५ के दिन प्रतिष्ठित किया गया हैं । यह चित्रपट बनानेकी आज्ञा प.पू. प्रभुश्रीजीने श्री हीराभाई झवेरीको दी थी । उन्होंने युरोपके देश पेरीसमें जाकर यह चित्रपट बनवाया था । इस चित्रपटको स्टीमरमें लाते समय समुद्रमें तूफान आया और स्टीमर डोलायमान होने लगी । भगवानके चित्रपटको कोई हानि न पहुँचे ऐसा सोचकर हीराभाई दोनो हाथोसे चित्रपटको पकडकर हृदयमें उल्लासपूर्वक **'सहजात्मस्वरूप परमगुरु'** मंत्र बोलने लगे । थोडी देरमें तूफान शांत हो गया और शांति फैल गई । उपर दर्शित सभामंडपमें भगवानका समवसरण रखकर उसमें भगवान महावीरके पंचधातुके प्रतिमाजी विराजमान कर प्रतिदिन पूजा सुबह ९ से १२ बजे तक (३ घंटे) करनेमें आती है । और अंतमें आरती-मंगल दीवा उतारकर कार्यक्रम पूरा होता है । ऐसी अद्‌भुत प्रतिदिन भक्ति-सत्संगकी साधना विश्वमें कहीं पर भी दिखाई नहीं देती हैं । इस आश्रममें मध्यस्थ वातावरण होनेसे श्वेतांबर, दिगंबर, स्थानकवासी, वैष्णव संप्रदाय आदिके लेकिन आत्माकी पहचान करनेकी भावनावाले जिज्ञासु जीव आते है और रहते हैं । यह पवित्र सत्संगधाम, तीर्थशिरोमणी आश्रमकी एक मुख्य विशिष्टता है ।

आश्रमके जिनमंदिरमें आये हुए रंगमंडपका दृश्य

"प्रभु भक्ति त्यां उत्तम ज्ञान, प्रभु मेळववा गुरु भगवान" – श्रीमद् राजचंद्र

घंटानाद

इस मंदिरके बाहर एक घंट लटका हुआ है । इसे दिनमें पाँच बार प्रत्येक भक्तिकी शरूआतमें बजाया जाता है । जिससे मुमुक्षुओके हृदयमें भक्तिमें जानेके भाव उत्पन्न होते है । दूसरे तीर्थोमें मात्र खाना खानेके लिये घंट बजता है। आश्रममें प.पू. प्रभुश्रीजीने भक्ति और सत्संगका विशेष माहात्म्य बताया है। इसलिये भक्ति सत्संगकी सबको याद दिलानेके लिये यह घंटारवकी योजना की है । यह अलौकिक पद्धति देवलोकमें जैसे सुघोषा घंटानाद देवोको भगवानके पंचकल्याणकमें जानेकी याद दिलाते हैं वैसे ही मुमुक्षुओको भक्ति सत्संगमें जानेकी याद दिलाते है ।

श्री मगनभाई लक्ष्मीदासने बताया कि–

प.पू. प्रभुश्रीजीकी आज्ञासे मैं प्रतिदिन समयपर घंटा बजाकर भक्तिकी शरूआत करता था । एक दिन दोपहरको किसीके कहनेसे देरीसे घंट बजाया । लेकिन समयपर पू. श्री ब्रह्मचारीजी भक्तिमें आकर बैठ गये । मुझे पूछा कि घंट क्यों नही बजाया । मैंने जो हकीकत बनी थी वह कही । तब पू. श्री ब्रह्मचारीजीने कहा– ऐसा नहीं करना । समय पर घंट बजा ही देना ।

जिनमंदिरमें प्रतिष्ठित मूळनायक श्री चंद्रप्रभ आदि भगवान

श्री शीतलनाथ भगवान

"अनंत शांतमूर्ति ऐसे चंद्रप्रभ स्वामीको
नमो नमः" – श्रीमद् राजचंद्र

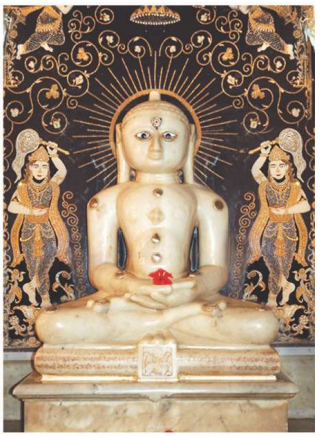

श्री सुविधिनाथ भगवान

श्री आदिश्वर भगवान

श्री शीतलनाथ भगवान

"श्रीमान् वीतराग भगवानोने जिसका अर्थ निश्चित किया है ऐसा, अचिंत्य चिंतामणिस्वरूप, परम हितकारी, परम अद्भुत, सर्व दुःखोका निःसंशय आत्यंतिक क्षय करनेवाला, परम अमृत स्वरूप ऐसा सर्वोत्कृष्ट शाश्वत धर्म जयवंत रहे, त्रिकाल जयवंत रहे." – श्रीमद् राजचंद्र (पत्रांक ८४३)

"लाखो सुर-नर-पशुपंखीने उपकारी भगवान,
क्षुद्र साधन-सामग्री मुज, शुं करी शकुं तुज गान?
जय अहो! जिनेन्द्र महान,
जय देव जिनेन्द्र महान." – (पू. श्री ब्रह्मचारीजी)

इस आश्रमके श्वेतांबर जिनालयमें मूळनायक श्री चंद्रप्रभ भगवानके प्रतिमाजी कच्छके शेठ श्री जेठाभाई नरसी केशवजीने पालीताणाकी मूळ टूकमेंसे दीये हैं। और एक श्री आदिश्वर भगवानके प्रतिमाजी, एक श्री सुविधिनाथ प्रभुके प्रतिमाजी, और दो श्री शीतलनाथ प्रभुके प्रतिमाजी शेठ श्री नरसी नाथा चेरीटी फंड तरफसे पालीताणा तलेटीकी धर्मशालामेंसे दीये गये हैं।

ऊपर बताये पाँचो प्रभुकी प्रतिमाजीकी प्रतिष्ठा विक्रम संवत् १९८४ के जेठ सुद ५ के दिन प.उ.प.पू. प्रभुश्रीजीकी विद्यमानतामें की गई हैं।

श्री श्वेतांबर मंदिरके उपर आये हुए श्री दिगंबर मंदिरके अंदरका दृश्य

श्री चंद्रप्रभ भगवान

श्री नेमिनाथ भगवान

श्री चंद्रप्रभ भगवान

श्री पार्श्वनाथ भगवान

श्री शांतिनाथ भगवान

श्री चंद्रप्रभ भगवान

श्री चंद्रप्रभ भगवान

श्री शांतिनाथ भगवान

श्री दिगंबर मंदिरके बाहरका दृश्य

अगास आश्रममें जब दिगंबर मंदिरके मूलनायक श्री चंद्रप्रभ भगवानके प्रतिमाजी और श्यामवर्णके श्री पार्श्वनाथ भगवानके प्रतिमाजी आये तब मुमुक्षुओने कहा कि कल सबेरे खोखेमेंसे प्रतिमाजीको बाहर निकालेंगे । लेकिन प्रभुश्रीजीने कहा– **'अभी ही निकालके लाओ ।'** फिर उन प्रतिमाजीको सभामंडपमें रखकर प्रभुश्रीजीकी आज्ञासे रातको ११ बजे घंट बजाया । प्रभुश्रीजी प्रतिमाजीके सामने बैठकर **'दुःख दोहग दूरे टळ्या रे'** ये स्तवन स्वयं बोले और दूसरे भी पीछे बोलते थे । एककी एक लाईन उल्लासभावसे ५-७ बार बुलायी थी । इन उपरोक्त जिन बिंबोकी प्रतिष्ठा विक्रम संवत् १९८४ के जेठ सुद ५ के दिन करनेमें आई हैं । दूसरे श्री चंद्रप्रभ भगवानके प्रतिमाजी पटणासे और श्री शांतिनाथ भगवानके प्रतिमाजी बुरहानपुरसे प्राप्त हुए हैं । उनकी प्रतिष्ठा विक्रम संवत् १९८८ के महा सुद १० के दिन की गई हैं । बाल ब्रह्मचारी श्री नेमिनाथ भगवानके ५११ साल पुराने प्रतिमाजी श्री बनेडीयाजी तीर्थमें से लाये गये हैं । उनकी प्रतिष्ठा विक्रम संवत् २०६० के आसो वदी १ के दिन की गई हैं ।

आश्रमके भूमिगृहमें आये हुए श्री गुरूमंदिरमें प्रतिष्ठित श्रीमदजीके प्रतिमाजी

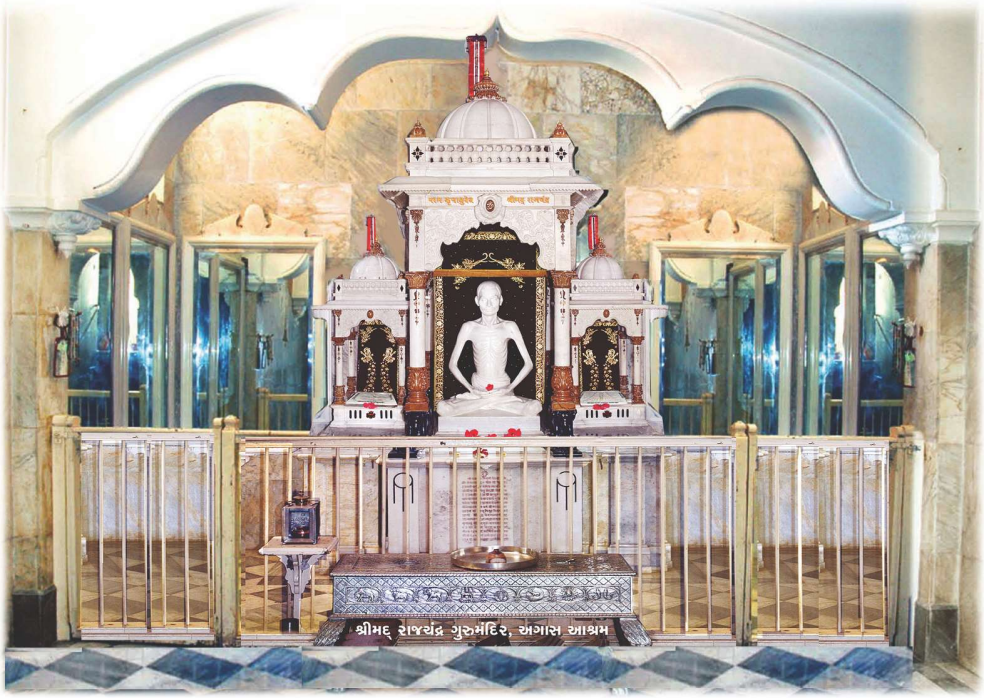

"प्रथम नमुं गुरुराजने, जेणे आप्युं ज्ञान; ज्ञाने वीरने ओळख्या, टळ्युं देह-अभिमान."

परमकृपालुदेवके प्रतिमाजीके दर्शनसे पूर्व संस्कारीको सम्यक्दर्शन

विक्रम संवत् १९८४ के जेठ सुद ५ के दिन भूमिगृहमें परमकृपालुदेवके प्रतिमाजीकी प्रतिष्ठाके वक्त प.पू. प्रभुश्रीजी बडे प्रेमसे प्रतिमाजीको भेटे और फिर पीछे मुडकर स्वमुखसे कहा कि– 'अंजनशलाका हो गई । कोई पूर्वका आराधक संस्कारी जीव होगा उसे इस प्रतिमाजीके दर्शन, सम्यक्दर्शनका कारण बनेंगे ।

परमकृपालुदेवकी यह देहप्रमाण संगमरमरकी प्रतिमा प.पू. प्रभुश्रीजीकी हाजरीमें नजर समक्ष बनी हुई है । प्रतिमाजी रेल्वेमें अगास स्टेशन पर आये तब वरघोडेके साथ, प.पू. प्रभुश्रीजी एवं अनेक मुमुक्षु बेन्डबाजेके साथ उल्लासभावपूर्वक स्टेशन पर लेने गये थे । भूमिगृहमें इस प्रतिमाजीके दाई ओर 'ॐकार' प्रणवमंत्रकी स्थापना और बाई ओर परमकृपालुदेवके चरणकमलकी प्रत्याकृतिकी स्थापना की गई हैं ।

एकबार प.पू. प्रभुश्रीजीका चोमासा पूनामें था । बहुतसे मुमुक्षु प.पू. प्रभुश्रीजीके दर्शन-समागमके लिये पूना गये थे । उस वक्त भगतजीको प्रभुश्रीजीने पूछा कि आश्रममें क्या चल रहा है ? तब उन्होंने कहा कि भूमिगृहमें खुदाईका काम चल रहा है और मुमुक्षु मिट्टीके तगारें भर भरके बाहर निकाल रहे हैं ।

तब प्रभुश्रीजीने कहा– **'भोला ! ए मिट्टीके तगारें नही, ए तो सोनेके तगारें है !!'**

मंदिर - सभामंडपके सामने चोगानका दृश्य

"यह स्थान कैसा है ये आप जानते है ? देवस्थानक हैं !
यहाँ पर जिनको आना हो वे लौकिकभाव बाहर, दरवाजेके बाहर छोडकर
आये । यहाँ पर आत्माका योगबल प्रवर्तमान है ।" –उपदेशामृत (पृष्ठ २६९)

आश्रमकी शरूआत हुई तबसे यह रायणका वृक्ष इधर है । इसके नीचे बैठकर प.पू. प्रभुश्रीजीने बहुत उपदेश दिया हैं और भक्ति भी करवाई हैं ।
"प्रभुश्रीजी कहते थे कि इस रायणके नीचे बैठकर भक्ति करते हैं जिससे रायणके वृक्षके जीवको भी लाभ होता हैं ।" –बोधामृत-१ (पृ. ४३९)

"प्रभुश्रीजी कहते थे कि यह रायणका जीव भव्य है, इसका कल्याण होनेवाला है । सत्पुरूष उसके नीचे बैठे तो उसकी छाया सत्पुरूष पर गिरती है, इससे पुण्यबंध होता है । ऐसे होते होते जीव मनुष्यभव पाता है । ऐसे जाने अनजाने भी जीवको लाभ होता है, संस्कार पडते हैं ।" –बोधामृत-१ (पृ. ५०६)

"सत्संग, सत्पुरूषका योग अनंत गुणका भंडार है ।" —श्रीमद् राजचंद्र (व. पृ. ६९६)

"सत्संग और सत्यसाधनके बिना किसी कालमें भी कल्याण होगा नहीं ।"
–श्रीमद् राजचंद्र (व. पृ. ७०३)

इस आश्रमके मंदिरके सामने मुख्य प्रवेशद्वारके उपर तीसरे मंजिल पर हजारो पुस्तकोका संग्रहवाला एक पुस्तकालय हैं और चौथे मंजिल पर खुल्ली अगासीके बीचमें आये हुए अष्टकोण मंदिरमें परमकृपालुदेवकी संगमरमरकी देहरी शोभायमान हैं ।

मुख्य प्रवेशद्वार उपरकी देहरीमें प्रतिष्ठित श्रीमदजीके पंचधातुके प्रतिमाजी

"सद्गुरु पदमें समात है, अर्हंतादि पद सर्व;
तातैं सद्गुरु चरणकुं, उपासो तजी गर्व।"

मुख्य प्रवेशद्वारके छतके ऊपर इस अष्टकोण मंदिरमें परमकृपालुदेवकी सुंदर कलात्मक संगमरमरकी देहरी हैं । उसमें कायोत्सर्ग ध्यानमुद्रामें श्रीमद् राजचंद्रजीके पंचधातुसे बने हुए प्रतिमाजी बिराजमान हैं ।

"उस देहरी ऊपरसे नीचे उतरते वक्त एक बार श्री दलपतभाईने प.पू. प्रभुश्रीजीसे पूछा कि सस्ते साहित्यकी एक पुस्तकमें ऐसा लिखा हुआ था कि मोक्षके लिये ७२ सीढीयाँ हैं । तब प.पू. प्रभुश्रीजीने कहा कि—इस देहरीकी कितनी सीढीयाँ हैं ? गिनने पर ये भी ७२ ही थी ।" —(प्रभुश्रीजीके बोधकी नोट नं. ३ पृ. ६)

संवत् १९८८ के महा सुद १० के दिन परमकृपालुदेवके प्रतिमाजीकी प्रतिष्ठा प.उ.प.पू. प्रभुश्रीजीके हस्तकमलसे करनेमें आई हैं ।

नूतन सभामंडप (भक्तिमंडप) के बहारका दृश्य

"प्रभुभक्तिमें जैसे हो वैसे तत्पर रहना यह मुझे मोक्षका धुरंधर मार्ग लगा है ।' (व.पृ. ३३५)

"भक्ति यह सर्वोत्कृष्ट मार्ग है । भक्तिसे अहंकार मिटता है, स्वच्छंद दूर होता है, और सीधे मार्गमें चला जाता है; अन्य विकल्प दूर होते हैं । ऐसा यह भक्तिमार्ग श्रेष्ठ हैं ।" श्रीमद् राजचंद्र (व.पृ. ६८७)

नूतन सभामंडपके बारेमें जानकारी

जिनमंदिरके पास रहा हुआ मूळ सभामंडप पर्युषण, दिपावली आदि पर्वमें छोटा पडता हैं । उन दिनोमें आश्रममें करीबन् दो हजार मुमुक्षु दस दिनके लिये आकर भक्ति सत्संग करते हैं । इस कारणसे यह नूतन सभामंडप १२०'×८०' फुटका करोडोंके खर्चसे संगमरमरसे बनाया गया हैं । इसमें १० हजार स्क्वायर फीटका सभामंडप हैं । और चारो ओर गेलेरीका विस्तार मिलकर कुल १७००० स्क्वायर फीटका होता हैं । इसमें २५०० मुमुक्षुभाई बहनें साथमें बैठकर भक्ति स्वाध्याय कर सकते हैं । यह भव्य सभामंडप १०८ स्तम्भ पर बना हुआ हैं । ये सब स्तम्भ नीचे भूमिगृहमें होनेसे उपर अदृश्य हैं । सभामंडपके सभी दरवाजे बर्माटीकसे बने हुए हैं । चौकठमें सुंदर नक्काशीकाम किया हुआ हैं । बाहरकी गेलेरीकी छते भी सुंदर डीजाइनसे युक्त होनेसे इस भक्तिमंडपकी शोभामें अभिवृद्धि करते हैं । यह नूतन सभामंडपके नीचे भूमिगृहके आधे भागमें बिक्रीके लिये रक्खे गये लाखसे ज्यादा पुस्तकोका संग्रह हैं । बाकीके आधे भागमें परमकृपालुदेव आदिके जीवन चरित्रोका चित्ररूपमें प्रदर्शन रक्खा हुआ हैं ।

"वैराग्य-उपशमका बल बढे उस प्रकारके सत्संग एवं सत्शास्त्रका परिचय करना, यह जीवके लिये परम हितकारी है । दूसरा परिचय यथासंभव निवर्तन करने योग्य है ।" (व. पृ. ४१४)

नूतन सभामंडप (भक्तिमंडप) के अंदरका दृश्य

''सत्संग यह सर्व सुखका मूल है ।'' -श्रीमद् राजचंद्र (पृ.७५)

नूतन सभामंडपमें श्रीमद् राजचंद्रजीका कायोत्सर्ग मुद्रामें
१३ फूट ऊँचाईका स्वर्ण वरखकी फ्रेमके साथ बना भव्य विशाल चित्रपट मुख्य स्थान पर
दर्शनार्थ स्थापित किया गया हैं । इस चित्रपटकी तीन विशेषताए हैं ।
इस चित्रपटके सामने खडे रहकर नीचे चरणकमलके दोनो अंगूठो पर नजर रखकर,
दायें या बायें जिस तरफ हम फिरेंगे उसके साथ वे चरणकमल भी दायें या बायें घूमेंगे ।
उसी तरह उनकी दोनो आंखे पर सामनेसे नजर स्थिर करके जिस तरफ हम दायें
या बायें फिरेंगे उस तरफ उनकी आंखे भी हमारे सामने ही देखती हुई मालुम पडेगी ।
तीसरी विशेषता यह है कि चित्रपटके मध्यमें आये हुए उनके हाथकी हथेलीमें
ध्यानसे देखने पर आंखका चिह्न दिखाई देगा ।

''सत्संग मिला कि उसके प्रभावसे वांछित सिद्धि हो ही जाती है ।''-श्रीमद् राजचंद्र (पृ.७५)

प.पू. प्रभुश्रीजी बताते हैं कि–

'वीतरागकी सभामें, समागममें मोहनीय कर्मको बाहर ही बैठना पडता है ।'(उपदेशामृत पृ. ९३)

**''होशियारी करनेवाले पंडिताईवाले लेकिन श्रद्धा-प्रतीतिसे रहित हैं वे रह जायेंगे
और पीछे बैठे हुए भोले भाले अनपढ भी यदि श्रद्धाको दृढ कर लेंगे तो
उनका काम हो जायेगा ।''** –(उपदेशामृत पृ. ३४६)

प.उ.प.पू. प्रभुश्रीजीके अग्निसंस्कारके स्थान पर बना हुआ स्मारक

प.उ.प.पू. प्रभुश्रीजीके अंतिम उद्‌गार

सं. १९९२के चैत्र वद ६ के दिन प.पू. प्रभुश्रीजी कहते हैं :–

"आत्माका मृत्यु महोत्सव हैं एक मृत्यु महोत्सव हैं ।..... एक आत्मा । दूसरा कुछ नहीं । उसका मृत्यु महोत्सव । मृत्यु महोत्सव... परमकृपालुदेवका शरण है वही मान्य है.... सब संपसे मिलकर रहें ।.... विराम लेता हूँ, विराम लेता हूँ, क्षमा चाहता हूँ । एक आत्माके सिवाय दूसरी बात नहीं हैं ।.... सभी परमकृपालुदेवकी दृष्टिवालोका कल्याण हैं । भावना है वही बडी बात हैं । फूल नहीं तो फूलकी पंखुडी । कृपालुदेवके प्रति जिन्हें दृष्टि हैं उन सबका काम हो जायेगा । दूसरे लाखो हो तो भी क्या ?"

संवत् १९९२ के वैशाख सुद ८ के दिन नित्यनियमानुसार देववंदन करके अंतेवासीओको 'अपूर्व अवसर' का पद बोलनेको कहा । कृपालुदेवका यह भावनासिद्ध पद पूर्ण होने पर रातको आठ बजकर दस मिनिट पर बयासी वर्षकी उम्रमें इन महापुरूषका पवित्र आत्मा परम समाधिमें स्थित होकर, नाशवंत देहका त्याग कर परमपदके प्रति प्रयाण कर गया । अनंतबार अभिवंदन हो इन कल्याणमूर्ति प्रभुश्रीजीके परम पुनित पदारविन्दको ! और उनके द्वारा बताये हुए दिव्य शाश्वत मोक्षमार्गको ।" –(उपदेशामृत पृ. [७८])

दूसरे दिन मुमुक्षुओका बडा समुदाय इकट्ठा हुआ । प.उ.प.पू. प्रभुश्रीजीके पार्थिव देहको, पालखीमें बिराजमानकर, दोपहरको बारह बजे स्मशान यात्रा निकली थी और पूरे आश्रमकी प्रदक्षिणा करके चंदनके काष्टकी चितामें जिस स्थान पर अग्निसंस्कार करनेमें आया था उस स्थान पर बना हुआ यह स्मारक हैं ।

પ.ઉ.પ.પૂ. પ્રભુશ્રીજીકે સ્મારકમેં પ્રતિષ્ઠિત ચરણ-પાદુકાજી

"कौन उतारे पार, प्रभु बिन, कौन उतारे पार?
भवोदधि अगम अपार, प्रभु बिन, कौन उतारे पार?"

इस सुंदर संगमरमर पाषाणकी बनी हुई देहरीमें प.उ.प.पू. प्रभुश्रीजीके चरणकमलके दर्शन करके प्रदक्षिणा करते हुए मुमुक्षु "कौन उतारे पार" इस पदको बोलते हैं । परमकृपालुदेवने भी वचनामृत पत्रांक ८७५ में प.उ.प.पू. प्रभुश्रीजीके आत्माके गुणोकी उत्कृष्टताको देखकर इस प्रकार नमस्कार किया हैं :–

"परमकृपालु मुनिवर्यके चरणकमलमें परमभक्तिसे सविनय नमस्कार प्राप्त हो ।"

ऐसे परमोपकारी परमपुरूषके चरणकमलमें हमारा सबका कोटिशः प्रणाम हो ।

सं. १९९२ महा वह ७, तारीख १४-२-१९३६ को रातमें दस बजे प.उ.प.पू. प्रभुश्रीजीने स्वयं मुखसे कहे हुए वचनोमेंसे थोडे यहाँ लिखते हैं : "जैसे आत्मसिद्धिका जन्म आसो वदी १ का है; परमकृपालुदेवका जन्म कार्तिक पूर्णिमाका हैं । ऐसे एक तिथि यह देह भी पडेगा तब निश्चित होगी....यह दिन फिर तो स्पष्ट मालुम पडेगा । उस दिन आत्मसिद्धिकी भक्ति करें, उत्सवका दिन धर्ममें बिताये, और स्वामिवात्सल्य करे तब जो भी आये वे खाना खाकर जाये । लेकिन मरणतिथिके दिन स्वामिवात्सल्य होगा? ऐसा स्वयंने प्रश्न खडा किया। फिर स्वयंने ही उसका जवाब दिया कि वह जन्मतिथि या मरणतिथि नहीं लेकिन आत्माकी तिथि समझना; इसलिये स्वामिवात्सल्य करनेमें कोई हर्ज नहीं हैं ।

उस दिन आत्मसिद्धिकी भक्ति करेगा उसे हजार उपवासका फल हो उतना लाभ मिलेगा । उसमें पोसह, जप, तप, संयम सब आ जाता है ।" (बो.३ पत्रांक ३२९)

इसलिये आश्रममें प्रतिवर्ष वैशाख सुद ८ और ९ ये दो दिनकी आराधना पर्वरूपसे की जाती है । वैशाख सुद ८ के दिन सभामंडपमें समाधिमरणकी छत्तीस मालाए रातको ८ से ११ बजे तक गिनी जाती हैं । और ११ से १२ बजे तक प.पू. प्रभुश्रीजीकी देहरी पर जाकर मुमुक्षु भक्ति करते हैं । और वैशाख सुद ९ के दिन सुबहमें ९ बजेसे १२ बजे तक सभामंडपमें आत्मसिद्धिकी पूजा, भक्ति मुमुक्षुवर्ग भावपूर्वक करते हैं ।

परम पूज्यश्री ब्रह्मचारीजीके अग्निसंस्कारके स्थान पर बनी हुई देहरी

શ્રીમદ્ રાજચંદ્ર આશ્રમ અગાસમાં પૂજ્યશ્રી બ્રહ્મચારીજીના અગ્નિસંસ્કાર સ્થાને બનાવેલ દેરી

"मंत्रे मंत्र्यो, स्मरण करतो, काल कादु हवे आ, ज्यां त्यां जोवु, परभणी भुली, बोल भुलुं पराया;
आत्मा माटे जीवन जीववुं, लक्ष राखी सदा ए, पामुं साचो जीवन-पलटो मोक्षमार्गी थवाने।"

इस देहरी पर मुमुक्षु इस पदको बोलकर नमस्कार करते है ।

पूज्यश्री ब्रह्मचारीजीकी अंतिम आराधना

कार्तिक सुद ७, वि. सं. २०१० के दिन प.पू. प्रभुश्रीजीके उपदेशामृतकी प्रेसकोपी तैयार करनेका कार्य शामको ४ बजे पूर्ण करके पू.श्री ब्रह्मचारीजी लोटा लेकर जंगलमें जाकर वापिस आए और हाथ पैर धोकर राजमंदिरमें परमकृपालुदेवके चित्रपटके सामने ध्यानमें खडे रहे । प्रतिदिन ध्यान ५-७ मिनिटमें पूरा होता था लेकिन आज तो २०-२५ मिनिट ध्यान चलता रहा । अंतमें पूज्यश्रीका देह शामको ५-४० मिनिट पर कायोत्सर्ग मुद्रामें २-३ बार दायें बायें डोलायमान होकर अकस्मात नीचे गिर पडा । पीछे खडे मुमुक्षुओने नाडी तपासी तो पता चला कि पूज्यश्रीका देह छूट गया है । ऐसे कायोत्सर्ग मुद्रामें अद्‌भुत समाधिमरणको देखकर सब आश्चर्यचकित हो गये कि अहो ! मरणकी कितनी भयंकर वेदनाको भी उन्होंने कायोत्सर्ग मुद्रामें स्वरूपमग्न होकर सहन की । परमकृपालुदेवके समक्ष उनके शरणमें खडे खडे इस नश्वरदेहका त्याग करके अपूर्व समाधिमरण साध्य किया । पूरी रात उनके समक्ष भक्ति एवं मंत्रस्मरणकी धून चली । सुबह नौ बजे तक तो मुमुक्षुओकी बहुत बडी संख्या आश्रममें इकट्ठी हो गई । ग्यारह बजे पूज्यश्रीकी पालखी सह स्मशान यात्रा नीकली । आश्रमकी प्रदक्षिणा करके एक बजे अग्निसंस्कारके स्थल पर पहुँचे ।

अंतमें आश्रमके विद्वान ट्रस्टीश्री अमृतलाल परीखने विरहभरी आँखोमें आँसुके साथ उनके गुणग्राम करके अंतिम भाव अंजलि देकर पंचांग नमस्कार किये । उस समयके दृश्यने सबको भावविभोर कर दिया । पश्चात् चंदनके काष्टसे बनाई हुई चितामें पूज्यश्रीके देहको रखकर अग्निसंस्कार घी होमकर करनेमें आया था। उस स्थान पर बनी हुई यह देहरी हैं ।

श्री राजमंदिर – आज्ञाभक्ति लेनेका पवित्र स्थल और शांतिभुवन

प.उ.प.पू. प्रभुश्रीजी और पू. श्री ब्रह्मचारीजीके निवास स्थान भी यहीं पर हैं

संवत् १९७६ से १९९२ तक आश्रममें रहकर प.पू. प्रभुश्रीजीने एक अनन्य भक्तिक्रम प्रतिदिन १० घंटेका बनाकर दिया है । वह १०० वर्षसे उनके आज्ञानुसार इस आश्रममें चल रहा हैं ।

इस आश्रमकी भूमि पर प.उ.प.पू. प्रभुश्रीजीने १४ चोमासे किये हैं । राजगृही तीर्थ समान यह भूमि उनके चरणस्पर्शसे पावन बनी हैं । उनके पवित्र चेतनसे स्पर्श हुए परमाणुओका शांत अनुभव आज भी बहुत लोगोको होता हैं । वैसे ही पूज्यश्री ब्रह्मचारीजीने भी ११ वर्ष प.उ.प.पू. प्रभुश्रीजीकी सेवामें रहकर आश्रममें बिताये और उनके बाद १८ वर्ष तक इस आश्रममें स्थिरता करनेसे इस भूमिके कण कण पावन हो चूके हैं ।

''प.उ.प.पू. प्रभुश्रीजीने जो कार्यक्रम आश्रमके लिये निश्चित किया है वह बहुत दीर्घदृष्टिसे किया है । उसमें आनंद न आये उतनी जीवकी मुमुक्षुताकी कमी हैं ।'' –बोधामृत ३ (पत्रांक १२१०)

''ज्ञानीको पहिचानें; पहचानकर उनकी आज्ञाका आराधन करें ।''– श्रीमद् राजचंद्र (व. पृ. ६६९)

''वीस दोहरे, क्षमापना- इतना भी जो संतके पाससे मिला हो तो छेक क्षायिक समकित प्राप्त करायेगा; क्योंकि आज्ञा है, वह जैसी तैसी नहीं हैं ।'' –प.पू. प्रभुश्रीजी (उ. पृ. ३६९)

''आज्ञा आराधन करनेके योग्य होनेके लिये सदाचरण रखना जरूरी हैं । यह न हो तो सब व्यर्थ हैं । इसलिये प्रथम सात व्यसनके त्यागकी जरूरत हैं । और पाँच अभक्ष्य फल और शहद, मक्खन, त्यागने योग्य हैं ।'' –पू.श्री ब्रह्मचारीजी (बो.१ पृ. १०)

आश्रमका सबसे पहिला भक्तिमंडप यह शांतिभुवन

आश्रमकी शरूआतमें सबसे प्रथम भक्ति-सत्संग करनेके लिये यह सभामंडप बनाया था । बादमें मुमुक्षु समुदाय बढ जानेसे बडा सभामंडप, जिनमंदिरके पास बनाया गया । वह भी पर्युषण आदि पर्वोमें छोटा लगनेसे नया पांच गुना बडा नूतन सभामंडप बांधनेमें आया हैं । यह शांतिभुवन, हालमें जो वृद्ध लोग सीढी चढ न सके वे मुमुक्षुभाई बहन यहाँ पर बैठकर भक्ति स्वाध्याय स्पीकर द्वारा सुनते हैं ।

हालमें पर्युषणमें देववंदनके बाद बहनें प्रतिक्रमण भी यहाँ करती हैं । श्रीमद्जीका पद्मासन मुद्राका भव्य चित्रपट यहाँ स्थापित हैं । एक दिन शांतिभुवनमें प.पू. प्रभुश्रीजी बोध कर रहे थे तब मुमुक्षुओको कहा– मोक्ष देखना हैं ? फिर परमकृपालुदेवके चित्रपटकी ओर अंगुली करके बताया– 'देखो यह मोक्ष' ऐसे तीन बार कहा था ।

परमकृपालुदेवका आत्मा मोक्षस्वरूप है । **'तुं छो मोक्षस्वरूप ।'**

एक बार प्रभुश्रीजीने ब्र. मोहनभाईको भक्तिमें जानेको कहा, भक्तिमें जाकर वापस आकर प्रभुश्रीजीको कहा कि वहाँ तो कोई नहीं हैं । तब प्रभुश्रीजीने जवाबमें कहा कि तुझे भक्ति करनी है तो तुम तो वहाँ हो और जिसकी भक्ति करनी हैं वे परमकृपालुदेव भी वहाँ हैं, तो फिर दूसरे कोई वहाँ हो तो भी क्या ? और न हो तो भी क्या ?

एक बार ब्र. मोहनभाई भक्तिमें नहीं आये तब प.पू. प्रभुश्रीजीने कहा कि मोहन आज भक्तिमें क्यों नहीं आया ? ब्र. मोहनभाईने कहा– बापा ! मैं खेतमें घास निकालने गया था । प्रभुश्रीजीने कहा–मजदूर रक्खे तो कितना खर्च होगा ? ब्र. मोहनभाईने कहा– दो आना । प्रभुश्रीजीने कहा– दो आना ज्यादा या लाख रूपयेकी भक्ति ज्यादा । दो आना बचानेके लिये तुमने लाख रूपयेकी भक्ति खोयी ।

श्री शांतिभुवनके उपरका दृश्य

"सत् देव धर्म स्वरूप दर्शक सुगुरु पारावार है"

इस शांतिभुवनके ऊपरका भाग प्रथम तैयार होनेके बाद यहाँ पर चित्रपटकी दाई ओर कोनेमें प.पू. प्रभुश्रीजीके लिये एक लकडेकी फ्रेममें कांचकी केबीन बनानेमें आई थी । बाजुमें एक सुंदर कबाटमें परमकृपालुदेवके चित्रपटके दर्शनके लिए स्थापना की गई थी । उस चित्रपटकी अलमारीके पास बायें ओर प्रभुश्रीजी पाट पर बिराजमान होकर मुमुक्षुओंको उपदेश देते थे । वहाँ पर प.पू. प्रभुश्रीजीके समयका परमकृपालुदेवका चित्रपट जीर्ण होनेसे उस स्थान पर सुंदर शीशमका गोख बनाकर नवीन चित्रपटकी स्थापना सं. २०७६ में आश्रमके शताब्दी उत्सवमें दर्शनार्थ की गई हैं ।

एक बार प.पू. प्रभुश्रीजी बोध दे रहे थे तब एक भाई जो पाठशालाके प्रधान अध्यापक थे । उनको ऐसा विकल्प हुआ कि महाराज धर्मकी बाते करते हैं वो कौन जाने सच्ची है या गलत ? उसी समय अंतर्यामी प.पू. प्रभुश्रीजी बोले कि– "चार आनेका मटका खरीदने जाय तो दस टकोरे मारकर देखते है कि फूटा हुआ या दरार तो नहीं हैं ? पाँच रूपयेका धोती जोडा लेने जाय तो पाँच दुकानमें फिरते है कि कही में ठगा नही जाऊँ । तो सच्चा धर्म लेने निकले हो तो किसलिये चौकसी नहीं करना ? जितनी शक्ति हो उतनी चौकसी करना और फिर सच्चा लगे तो ही ग्रहण करना ।" प.पू. प्रभुश्रीजीने उनके मनके भाव बतानेसे यही सच्चा है ऐसी उनको श्रद्धा हो गई और जीवनभर प्रभुश्रीजीके कहनेसे परमकृपालुदेवके भक्त बनकर रहे ।

"गुरू होना बडा जोखमदारीका काम है ।" (उपदेशामृत पृ. २९६)

अगास आश्रमकी अनोखी विशेषता

आज्ञाभक्ति-स्मरणमंत्र लेनेका स्थल

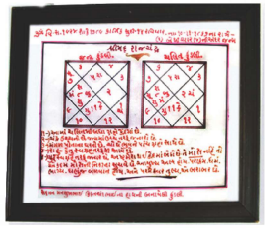

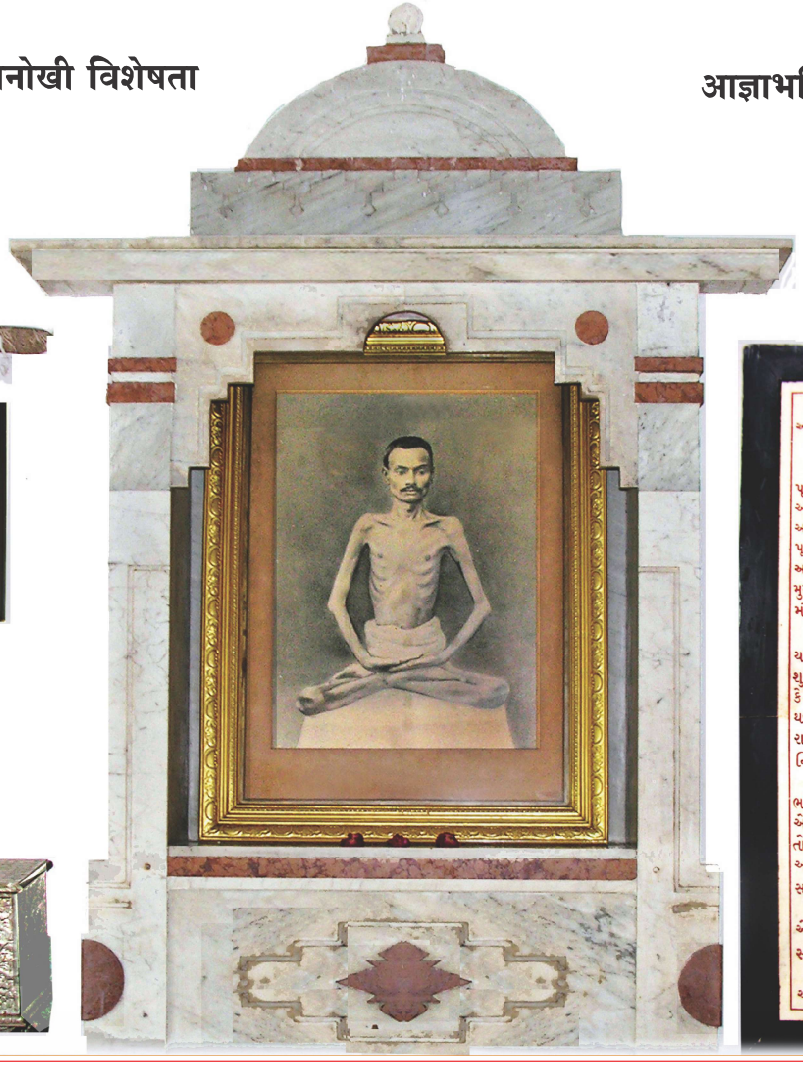

ૐ

અનન્ય શરણના આપનાર પરમકૃપાળુ શ્રીમદ રાજચંદ્ર સદ્‌ગુરુદેવને અત્યંત ભક્તિથી ત્રિકાળ નમસ્કાર હો.

પરમ કૃપાળુ સદ્‌ગુરુદેવ શ્રીમદ રાજચંદ્ર પ્રભુએ અનંત કરુણા કરીને ચૌદ પૂર્વના સારરૂપ જે મહામંત્ર તથા નિત્યનિયમાદિ સાધના પ.પૂ.પ્રભુશ્રીજીને આપેલ તથા જો કોઈ કલ્યાણની ઇચ્છાવાળા જિજ્ઞાસુઓને આપવા તેઓશ્રીએ તે સાધનની ઇચ્છાવાળા મુમુક્ષુઓને આપવા પૂ.બ્રહ્મચારીજીને આજ્ઞા કરેલ તે આત્મધ્યેયકારી સાધનોની આજ્ઞા આપનાર આજે કોઈ નહિ હોવાથી તે આજ્ઞાના આરાધનની ઇચ્છાવાળા ભાવિક મુમુક્ષુઓએ પ.પૂ.પ્રભુશ્રીજીના ઉપદેશ અનુસાર નીચે મુજબ કર્તવ્ય છે.

મંત્ર સ્મરણ -

'સદ્‌ગુરુ આત્મસ્વરૂપ પરમગુરુ' એ મહાચમત્કારિક મંત્ર છે. સંભારતાં, ચાદ કરતાં, બોલતાં, વૃત્તિ તેમાં વાળતાં કોટિ કર્મ ખપે છે, શુભ ભાવ થાય છે, શુભ ગતિ અને મોક્ષનું કારણ થાય છે. મરણ સમયે ચિત્તવૃત્તિ મંત્રસ્મરણમાં કે તે સાંભળવામાં જોડાય તો ગતિ સારી થઈ જાય અને જન્મમરણથી મુક્ત થવાનું સમર્થ કારણ થાય છે. આ મંત્રની ત્રણ કે પાંચ માળાનો નિત્યનિયમ રાખવા યોગ્ય છે.

નિત્યનિયમ :-

ભક્તિના પીસ દુહા, યમનિયમ, ક્ષમાપનાનો પાઠ વિગેરે રોજ ભક્તિ કરવી. તેથી કોટિ કર્મ ખપી જશે. સારી ગતિ થશે. એકલો આવ્યો છે એકલો જશે. ભક્તિ કરી હશે તે ધર્મ સાથે જશે. આત્માને સુખ પમાડવું હોય તો પૈસો ટકો કોઈ સાથે આવશે નહિ. એક ભજન ભક્તિ કરી હશે તે સાથે આવશે. ઘણા ભવ છૂટો જશે. માટે આ કર્તવ્ય છે. તેથી મનુષ્ય ભવ સફળ થશે.

સાત વ્યસનનો ત્યાગ :-

જુગાર, માંસ, દારૂ, મોટી ચોરી, વેશ્યાગમન, શિકાર, પરસ્ત્રીગમન એ સાત વ્યસનનો ત્યાગ કર્તવ્ય છે.

સાત અભક્ષ્યનો ત્યાગ :-

વડના ટેટા, પીપળાના ટેટા, ઉમરડાં, અંજીર, મધ અને માખણ એ સાત અભક્ષ્યનો ત્યાગ કર્તવ્ય છે.

आज्ञा भक्ति लेनेका अपूर्व माहात्म्य

"ज्ञानीकी एक आज्ञा आराधनेसे अनेक विध कल्याण हैं ।" (व.पृ. ६६९)

अनंतकालमें अनंतबार दीक्षा लेकर जप तपादि धर्मके सर्व साधन करने पर भी जीवका चार गतिका परिभ्रमण मिटा नहीं । क्योंकि वे स्वच्छंदसे किये या कुगुरू आश्रयसे किये; लेकिन आत्मज्ञानी सत्पुरुषकी आज्ञासे नहीं किये । आत्मज्ञानी पुरूष ही आत्मज्ञान प्राप्त करा सकते हैं।

'सर्व क्लेशसे और सर्व दुःखसे मुक्त होनेका उपाय एक आत्मज्ञान है ।' (व.पृ. ४५१)

इसलिये अब ज्ञानीपुरुषकी आज्ञाका आराधन यही धर्म, यही तप मानकर परमकृपालुदेवके द्वारा बताई गई आज्ञाभक्ति ग्रहण करनेका यह सर्वोत्तम स्थल है ।

आत्महितके लिये हे प्रभु, यमनियम, क्षमापना, ये तीन पाठ और 'सहजात्मस्वरूप परमगुरू' मंत्र स्मरणकी माला परमकृपालुदेवकी आज्ञासे यहाँ पर ली जाती हैं ।

सात व्यसनः– जुगार, मांस, शराब, बडी चोरी, वेश्यागमन, शिकार और परस्त्रीगमनका त्याग परमकृपालुदेवकी आज्ञासे यहाँ करते हैं । जिससे मन पवित्र बनकर आत्मज्ञानके योग्य बनता हैं।

सात अभक्ष्य :– बडके टेटे, पीपलके टेटे, पीपलेके टेटे, उमरडा, अंजीर, शहद और मक्खनका त्याग यहाँ पर परमकृपालुदेवकी आज्ञासे करते हैं ।

संवत् १९५४ में वसो गाँवमें परमकृपालुदेवने प.पू. प्रभुश्रीजीको यह स्मरणमंत्र आदि आत्मार्थ साधन कल्याणके जिज्ञासु जीवोंको देनेकी आज्ञा की थी । वही आत्मार्थ साधन प.पू. प्रभुश्रीजीने पूज्यश्री ब्रह्मचारीजीको योग्य जीवोको देनेकी आज्ञा की थी ।

अब उस आज्ञाको देनेका किसीको अधिकार नहीं होनेसे परमकृपालुदेवके चित्रपट समक्ष उनको प्रत्यक्ष मानकर बाजुमें रहे हुए शिलालेखको पढकर

'संतके कहनेसे कृपालुदेवकी आज्ञा मुझे मान्य है' (उपदेशामृत पृ.२७३)

ऐसा कहकर आज भी यह आज्ञा मंत्रस्मरण यहाँ लिया जा सकता है । यह अगास आश्रमकी अनोखी विशेषता है । प. पू. प्रभुश्रीजीने और पू. श्री ब्रह्मचारीजीने हजारो मुमुक्षुओंको आज्ञाभक्ति, इस स्थान पर देकर मोक्षमार्ग पर चढाये है ।

आज्ञा देनेका अधिकार किसको दिया

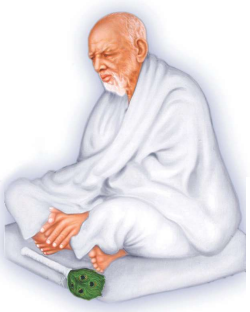

परमकृपालुदेवने वसो गाँवमें मुमुक्षुओके कल्याणके लिए आत्मसाधन बतानेकी आज्ञा प.उ.प.पू. प्रभुश्रीजीको दी थी । श्री लल्लुजी स्वामीको (प्रभुश्रीजीको) श्रीमदजीने बताया :

"जो कोई मुमुक्षुभाई एवं बहन आपके पास आत्मार्थ साधनकी मांग करे तब इस प्रकारसे आत्महितके साधन बताना :

(१) सात व्यसनके त्यागका नियम कराये ।
(२) हरी सब्जीयोका त्याग कराये ।
(३) कंदमूलका त्याग कराये ।
(४) अभक्ष्य पदार्थोका त्याग कराये ।
(५) रात्रिभोजनका त्याग कराये ।
(६) पांच माला गिननेका नियम कराये ।
(७) स्मरण मंत्र बताये ।
(८) क्षमापनाका पाठ और बीस दोहेका पठन मनन नित्य करनेका बताये ।
(९) सत्समागम और सत्शास्त्रका सेवन करनेका बताये ।" –जीवनकला (पृष्ठ २२४)

प.पू. प्रभुश्रीजीने अपने अंत समयमें आज्ञा देनेका अधिकार पू.श्री ब्रह्मचारीजीको दिया था । वह इस प्रकार हैं :–

"मुख्य ब्रह्मचारी सोंपणी. (ब्रह्मचारीजीको) कृपालुदेवके समक्ष जाना, प्रदक्षिणा कर, स्मरण लेने आवे तो गंभीरतासे ध्यान रखकर लक्ष रखना, पूछना । कृपालुदेवकी आज्ञासे और शरणसे आज्ञा मान्य कराना ।"

प्रभुश्रीजीने पुनः श्री ब्रह्मचारीजीको एकांतमें भी इस सौंपनेके संबंधमें बताया था उस समय प्रभुश्रीजीकी वीतरागता, असंगता, उनकी मुखमुद्रा, आँख आदिके फेरफारसे स्पष्ट झलक रही थी और मानो वे बोल नहीं रहे हैं लेकिन दिव्य ध्वनिके वर्णनके समान हम सुन रहे हैं ऐसा लगता था ।

'मंत्र देना, वीस दोहे, यमनियम, क्षमापनाका पाठ, सात व्यसन, सात अभक्ष्य बताना । तुम्हें धर्म सौंपता हूँ ।' "

(श्री ब्रह्मचारीजीकी संस्मरणपोथी) –उपदेशामृत (पृ. [७७])

प.उ.प.पू. लघुराजस्वामी (प्रभुश्रीजी) का निवासस्थान

"हम गुरु बनते नहीं है, लेकिन सद्‌गुरुको बता देते हैं ।"-प.पू. प्रभुश्रीजी (उ.पृ.२९६)

यह कमरा प.पू. प्रभुश्रीजीका निवासस्थान है । जहाँ अनेक भव्यात्मा, उनकी उपस्थितिमें उनके दर्शन करके पावन हुए हैं ।

वर्तमानमें इस कमरेमें प्रवेश करते समय सामने, कोनेमें रखा पाट, वह प.पू. प्रभुश्रीजीका सोने, बैठनेका स्थान था । उस पाट पर बैठकर अनेकबार अलौकिक बोधकी धोधमार वर्षा करके मुमुक्षुओको उपदेशामृतका पान कराते थे । इस पाटके पीछे अडकर एक कांचका कबाट दिखाई देता हैं । उसमें प.पू. प्रभुश्रीजीके चित्रपटके दर्शन होते हैं । उस कबाटमें प.पू. प्रभुश्रीजीके नाखून, लोचके बाल, दाढ, श्रुतियंत्र, सारणगांठका पट्टा और वे अपने हाथमें रखते थे वो लकडी भी यहाँ पर रक्खी गई हैं । उनके हस्तकमलसे लाल पेन्सिल द्वारा लिखा हुआ एक पत्र काचकी फ्रेममें मढा हुआ दिखाई देता हैं । उसके अलावा परमकृपालुदेवने अपनी मातुश्री और धर्मपत्नी द्वारा प.पू. प्रभुश्रीजीको कार्तिकेयानुप्रेक्षा और श्री देवकरणजी मुनिको ज्ञानार्णव ग्रंथ स्वाध्यायके लिये वहोराया था । वे हस्तलिखित दलदार ग्रंथ भी यहाँ दर्शनार्थ रक्खे हुए हैं । इस कमरेमें दूसरी छोटी पाट भी दूसरे कोनेमें रखी हुई हैं । वह पू. श्री ब्रह्मचारीजीके सोनेके लिये थी । रात्रिमें प.पू. प्रभुश्रीजीके कमरेमें पू. श्री ब्रह्मचारीजीके सिवाय किसीको भी रहनेकी आज्ञा नहीं थी ।

प.पू. प्रभुश्रीजी पर आये हुए पत्रोका जवाब प.पू. प्रभुश्रीजीके आज्ञानुसार पू. श्री ब्रह्मचारीजी रातको ग्यारह, बारह बजे प.पू. प्रभुश्रीजीके आराम करनेके बाद यह छोटी पाटके पास बैठकर बारहसे डेढ बजे तक लिखते थे । और तीन बजे प.पू. प्रभुश्रीजीके उठनेसे पहले उठकर उनकी सेवामें हाजिर हो जाते थे ।

"निशदिन नैनमें नींद न आवे, नर तबहि नारायण पावे ।" (ब.पृ.४८९)

पू. श्री ब्रह्मचारीजीका निवासस्थान

पू.श्री ब्रह्मचारीजीकी मुनि जैसी दिनचर्या

संवत् २००६ के बाद पूज्यश्री ब्रह्मचारीजीका कायमी निवासस्थान, जिस कमरेमें पूज्यश्रीके दो चित्रपट स्थापित किये हैं, वह दर्शनीय स्थान बन गया ।
इस कमरेमें पाटके ऊपर चटाई बिछाई हुई रहती थी । उस पर पूज्यश्री बिराजते थे । सामने सत्संगके लिये आये हुए मुमुक्षु भाई बहन बैठते थे । पूज्यश्री बोध देते, किसीको स्मरणमंत्र लेनेकी भावना हो तो मंत्रके बारेमें समझाते और राजमंदिरमें परमकृपालुदेवके चित्रपटके सामने ले जाकर मंत्रकी आज्ञा देते थे ।
पूज्यश्रीकी बैठनेकी और बोलनेकी सहज निरभिमानी दशा अद्‌भुत थी ।
वे जहाँ कहीं भी जाते वहाँ एक छोटी चटाई पोने दो बाई पोने दो फूटकी जिसे प्रभुश्रीजीके कहनेसे रक्खी थी उसे आज्ञाके रूपमें हमेशा साथमें रखते थे और उसी पर बैठते थे । रातको भी पाट पर बिछाई हुई चटाई पर ही सोते थे ।
बाहरसे आने पर राजमंदिरमें प्रथम परमकृपालुदेवके चित्रपट समक्ष **'इरियावही'** सूत्रका काउसग्ग करके ध्यान करते थे ।
फिर अपने कमरेमें प्रवेश करते थे । वे कभी स्नान नहीं करते थे ।
उनकी दिनचर्या मुनि जैसी थी ।

"सद्‌गुरुमें भूल नहीं होनी चाहिए । इसमें भूल होगी तो सबमें भूल होगी ।" –पू. श्री ब्रह्मचारीजी

प.उ.प.पू. प्रभुश्रीजीके आज्ञांकित अंतेवासी पूज्यश्री ब्रह्मचारीजी

"एक
परमकृपालुदेवकी
श्रद्धा ही
सुखकारी है ।
जिसे वह श्रद्धा आ गई
वह दुःखी होता नहीं है ।
दुःख आ पडे तो
दुःख मानता नहीं है ।
क्योंकि उसे
एक प्रकारका
आधार मिला है ।"

—पू. श्री ब्रह्मचारीजी

पूज्यश्री ब्रह्मचारीजी एक बार बोधमें बताते हैं :—

"कृपालुदेवकी जो भक्ति करते है, उन पर वात्सल्यभाव रखना । जिस जीवका कल्याण होनेवाला हो वही जीव कृपालुदेवकी शरणमें आता हैं । प्रभुश्रीजी कहते थे कि कृपालुदेवके शरणमें जो आये हो उनके हम दासके दास हैं । अपनेको सेवा करनी है ऐसी भावना रखना । मुमुक्षु है वह सगेसंबंधीसे भी ज्यादा हितकारी है । वात्सल्य अंग तो पहले चाहिए । दूसरा कुछ भी न हो और वात्सल्यभाव रक्खें तो भी तीर्थंकर गोत्रका बंध करता हैं । ऐसे गुण अपनेमें नहीं हैं तो मुझे लाना हैं ऐसा रखना । सम्यक्त्व हो ऐसे गुण मेरेमें न आये तो सब पानीमें गया ।"—बोधामृत भाग १ (पृ.६९२)

पू. श्री ब्रह्मचारीजीका देहोत्सर्ग संवत् २०१० में हुआ था । आज छासठ सालके बाद भी कोई उत्तराधिकारी नहीं होने पर भी इस आश्रममें ज्ञानीके आज्ञानुसार भक्ति, सत्संगका निश्चित कार्यक्रम लगातार चल रहा हैं । इस आश्रममें आनेवाले प्रत्येक मुमुक्षुको आत्मार्थके लिये सत्संग, त्याग, भक्ति आदि करके यहाँ पर रहना हैं । कोई भी विषय कषाय या प्रमादके लिये आश्रममें रहनेकी मनाई हैं ।

प.पू. प्रभुश्रीजीके लिये बनी हुई हाथसे चलती लिफ्ट

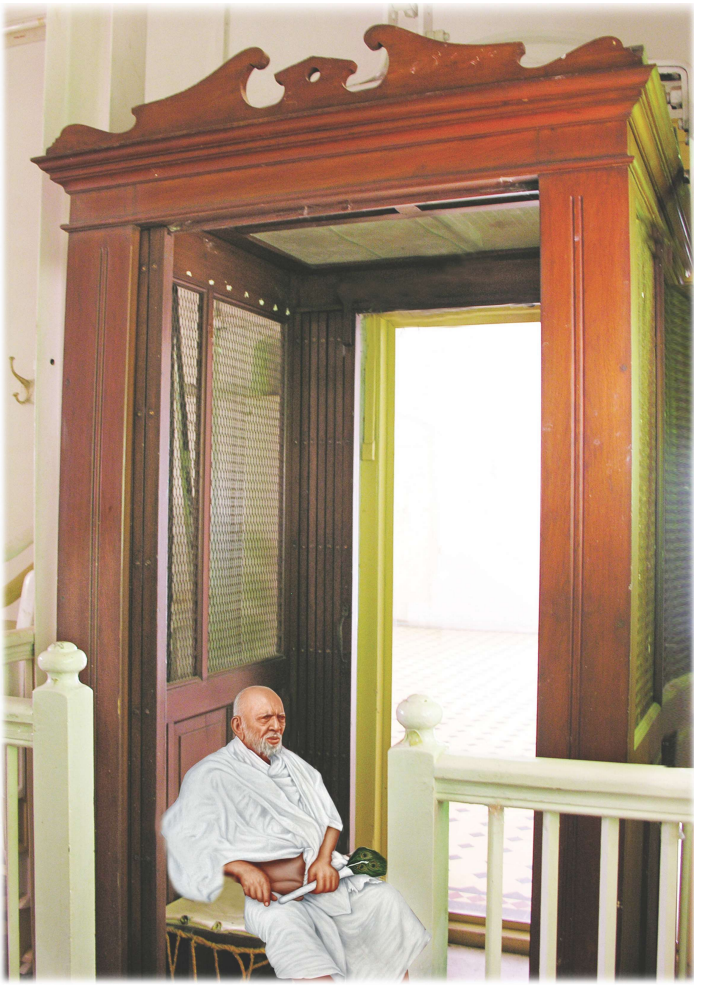

श्री हीराभाई झवेरी एक बाहोश मुमुक्षु थे । उनको एक ही पुत्री थी । उसकी छोटी उम्रमें ही मृत्यु हो गई । एक बार पूनामें उन्होने प.पू. प्रभुश्रीजीसे पूछा कि ये मृत्यु क्या चीज है ? इस मौतका कोई औषध होगा ? तब प्रभुश्रीजीने कहा– हा ! हम रोज यही दे रहे हैं । उनके बोधसे श्रद्धा होने पर वे पेरीस छोडकर यहीं आश्रममें आकर रहने लगे । प.पू. प्रभुश्रीजीको सीढी चढनेमें कठिनाई होती थी उसे देखकर लिफ्ट बनानेकी उनको भावना जगी । प्रभुश्रीजीकी आज्ञा लेकर लिफ्ट बना सके ऐसे अपने मित्र रमणभाईको पूछने पर उन्होंने कहा कि– हीराभाई मैं लिफ्ट बना दूंगा लेकिन तुम्हारे गुरुको मैं नमस्कार नही करूंगा । हीराभाईने कहा कि मुझे तो लिफ्टसे प्रयोजन है । फिर रमणभाई आश्रममें आये और प.पू. प्रभुश्रीजीके कमरेमें पैर रखते ही सामने प्रभावशाली संतके दर्शन होते ही हाथ जुड गये और साष्टांग दंडवत् नमस्कार भी किये । फिर बोधसे रंजित होकर जीवनपर्यंत परमकृपालुदेवकी भक्तिमें ही लगे रहे ।

अगास आश्रममें उपलब्ध व्यवस्था संबंधी विगत

मुख्य कार्यालय - ओफिस

यह कार्यालय आश्रमके सभामंडपके सामने ही आया हुआ हैं। यही पर सभी कारबार संबंधी कार्य होते हैं। विविध प्रकारके दान-भेटकी रसीदे यहांसे दी जाती हैं। आश्रमके कार्यालयका समय सुबह ८ से १२ और शाम २ से ६ बजेका हैं।

रहनेकी व्यवस्थाका विभाग

यह विभाग नूतन धर्मशालाके मुख्य प्रवेशद्वारके पासमें ही आया हुआ हैं। नये आनेवाले मुमुक्षुओको ठहरनेकी व्यवस्था यहाँसे होती हैं। सभीको आश्रमके नियमानुसार रहना और भक्तिमें भाग लेना जरूरी हैं।

पुस्तक वितरण केन्द्र

आश्रम द्वारा गुजराती, हिन्दी और अंग्रेजी भाषामें करीबन १२५ पुस्तकोंका प्रकाशन होता हैं। इसी केन्द्रसे पुस्तकोंका, परमकृपालुदेवके चित्रपट, प.उ.प.पू. प्रभुश्रीजी और पूज्यश्री ब्रह्मचारीजीके चित्रपट, माला, पंचांग आदिका वितरण होता हैं।

सुविधा केन्द्र

इलेकट्रीक, प्लम्बरींग, सुथारीकाम, पूछपरछ इत्यादि कामोके लिये यह सुविधा केन्द्रकी व्यवस्था हैं।

भोजनशाला

सुबह चाय, दूध, आदिकी व्यवस्था उपलब्ध हैं। दोपहरको लगभग १२ बजे भक्ति उठनेके बाद भोजनशालामें सामुहिक भोजनकी व्यवस्था हैं; और शामके लगभग ५ बजेसे चोविहारकी व्यवस्था हैं। रात्रिभोजनका आश्रममें निषेध हैं। भोजनका पास सुबह लगभग १० बजे और शामको ४ बजे ले सकते हैं। दोपहरमें २ बजे चाय की व्यवस्था रसोडेमें उपलब्ध हैं।

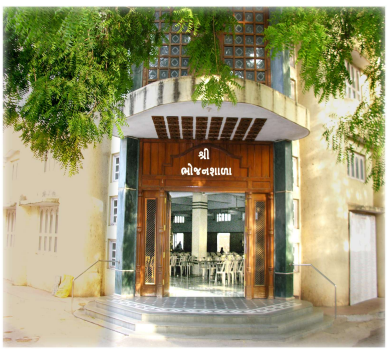

भोजन सामग्री खरीदनेका केन्द्र

यह आश्रमके रसोडा विभागके सामने आया हुआ हैं। वहाँसे घर पर भोजन बनानेकी सामग्री और खाखरा इत्यादि भी ले सकते हैं।

पूरे अगास आश्रमके फैले हुए विस्तारका दृश्य

"कदापि
किसी तरह
उसमें से
कुछ करें तो
वैसा स्थान कहाँ है
कि जहाँ जाकर रहे ?"
श्रीमद् राजचंद्र (पत्रांक १२८)
"अपने लिये तो
प.पू. प्रभुश्रीजीने
एसा स्थान बनाकर
समाधिमरण करनेका
स्थान निश्चित किया है ।"
पू. श्री ब्रह्मचारीजी
(पत्रसुधा पत्रांक १००१)

अगास आश्रममें आनेका मार्गदर्शन :–

रेल मार्ग :– आणंद स्टेशनसे खंभात जानेवाली ट्रेन प्रतिदिन आठ बार आती हैं और आठ बार जाती हैं । आणंदसे सुबह ५-००, ७-१५, ९-२०, ११-२०, १-३०, ३-३०, ५-५०, ८-१५ बजे ट्रेन मिलती हैं । आणंदसे तीसरा स्टेशन अगास हैं।

अगास स्टेशनसे आणंद जानेके लिये करीबन् सुबह ५-५० बजे, ८-००, १०-२०, १२-३०, २-३०, ४-४०, ६-५०, ९-१० बजे ट्रेन मिलती हैं । समय बदल भी शकता है ।

रोड मार्ग :– अमदाबाद अथवा वडोदरासे आणंद होकर विद्यानगर, करमसद, संदेसर होकर अगास स्टेशन आ सकते हैं । अगास गाँवमें जाना नहीं, अगास स्टेशनके सामने ही यह आश्रम हैं ।

हवाई मार्ग :– एयरपोर्ट-अहमदाबाद और वडोदरासे टेक्सी द्वारा आ सकते हैं ।

अगास आश्रमका संपर्क करनेके प्रकार

१. पोस्टका पता – श्रीमद् राजचंद्र आश्रम
स्टेशन अगास, पोस्ट बोरीया, वाया आणंद
(गुजरात) पीनकोड नं - ३८८१३०

२. कुरियर अथवा आंगडीयाका पता-
श्रीमद् राजचंद्र आश्रम, अगास
c/o चश्माघर, स्टेशन रोड, आणंद
(गुजरात) पीनकोड नं. ३८८००१

३. Email Id - info@agasashram.org

४. फोन करनेके लिये नंबर - ०२६९२-२८१७७८, ०२६९२-२८१८००

प्रकाशक – श्री भरतभाई एम. मोदी
श्रीमद् राजचंद्र आश्रम, अगास

प्रथम आवृत्ति- प्रत १०००, वि.सं. २०७७
लागत किंमत- रू. ५०/- वेचाण किंमत- रू. १०/-

इस पुस्तककी आशातना न करे, नीचे जमीन पर नहीं रक्खें ।